thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 28 24 से 30 जुलाई 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 श्रा. कृ. 13

आर्य समाज की एकता के लिए हर सम्भव प्रयास किया जायेगा

– स्वामी आर्यवेश

स्वामी आर्यवेश जी के प्रधान बनने पर फरीदाबाद में किया गया अभूतपूर्व अभिनन्दन

क्रान्तिकारियों के बलिदान से प्रेरणा लें युवा

– डॉ. अनिल आर्य

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् फरीदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज मंदिर, सैक्टर-19 फरीदाबाद में स्वामी आर्यवेश जी के सार्वदेशिक सभा प्रधान बनने पर अभिनन्दन समारोह तथा शहीद चन्द्रशेखर आजाद के जन्मोत्सव पर अत्यन्त भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सैक्टर-19 के संरक्षक तथा वयोवृद्ध आर्यनेता श्री लक्ष्मी चन्द्र आर्य ने की। उन्होंने अध्यक्षता का दायित्व आर्य केन्द्रीय सभा की प्रधाना श्रीमती विमला ग्रोवर जी को सौंप दिया जिन्होंने यह दायित्व अत्यन्त कुशलता पूर्वक निभाया। कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज सेवा सदन बल्लभगढ़ के प्रधान श्री जितेन्द्र सिंह आर्य ने किया तथा मुख्य अतिथि का पदभार केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने ग्रहण किया।

इस अवसर पर वयोवृद्ध आर्य नेता श्री लक्ष्मीचन्द जी ने स्वामी आर्यवेश जी को सभा का प्रधान बनने पर जहां हार्दिक बधाई दी वहीं सैक्टर-19 की ओर से स्वामी जी को हर प्रकार का सहयोग देने की घोषणा की उन्होंने कहा कि नव-निर्वाचित प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को आर्य समाज फरीदाबाद से हर प्रकार का सहयोग बढ़-चढ़कर दिया जायेगा हम हर प्रकार से उनके साथ हैं। आर्य केन्द्रीय सभा की प्रधाना श्रीमती विमला ग्रोवर जी ने स्वामी आर्यवेश जी को बधाई दी और अभिनन्दन किया वहीं उन्होंने आयोजकों के प्रति भी आभार प्रकट किया कि इतने कम समय में यह समारोह आयोजित कर इतनी बड़ी संख्या में आर्यों की उपस्थिति आपकी स्वामी आर्यवेश जी के प्रति निष्ठा की परिचायक है उन्होंने कहा कि आपके उत्साह को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने स्वामी जी का सम्मान किया तथा बधाई दी। समारोह में आई. ए. एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली रजनी शर्मा का भी सम्मान किया गया तथा उन्हें स्मृति चिन्ह एवं चन्द्रशेखर आजाद का चित्र आदि भेंट किया गया। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने रजनी शर्मा को इस उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए हार्दिक बधाई दी।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद की शहादत तथा सार्वदेशिक सभा के भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि चन्द्रशेखर आजाद ऐसे क्रान्तिकारी थे जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के क्रांतिकारियों का उत्सव मनाते समय हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। उनके त्याग और बलिदान को याद करते हुए राष्ट्र, समाज और मानवता की सेवा के लिए जीवन अर्पण करने की भावना का उदय होना उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वामी जी ने इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित होने पर आभार प्रकट करते हुए कहा कि मेरी पहली प्राथमिकता आर्य समाज में एकता स्थापित करने की होगी और इसके लिए हर सम्भव प्रयास किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए हम सभी पक्षों को आमन्त्रित करेंगे तथा आर्य समाज को संगठित करने के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा प्रयास किये जायेंगे। स्वामी जी ने कहा सार्वदेशिक सभा में अच्छे ग्रन्थों का प्रकाशन निरन्तर चलता रहे इसके लिए हम कटिबद्ध हैं और इसी का प्रारम्भ करते हुए हमने वेदों के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। पहली आवृत्ति में 25000 वेद सैट प्रकाशित किये जायेंगे। हमने निश्चय किया है कि जिन महानुभावों के अग्रिम आदेश दीपावली तक प्राप्त हो जायेगा उन्हें वेद सैट लागत मूल्य से काफी कम कीमत 2100 रुपये में दिये जायेंगे। उन्होंने कहा कि यह बहुत बड़ा कार्य है और आप सबके सहयोग से इसे पूर्ण किया जायेगा। स्वामी जी ने अपील की कि जो व्यक्ति एक लाख रुपये सहयोग रूप में प्रदान करेंगे उनके चित्र तथा संक्षिप्त जीवन परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा उन्हें 10 वेद सैट भी प्रदान किये जायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि प्रत्येक आर्य के घर में वेद अवश्य होना चाहिए आप सब स्वयं वेद का अग्रिम आदेश दें तथा अपने परिचितों को प्रेरित करे।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज से बुजुर्ग आर्य और नेता दिवंगत होते चले जा रहे हैं और उस कमी को पूरा करने के लिए तथा आर्य समाज में नवीन जीवन फूंकने के लिए पूरे देश में अभियान चलाया जायेगा तथा हजारों युवकों को दीक्षित करके आर्य समाज से जोड़ा जायेगा। शिविरों, व्यायाम शिविरों, जन-चेतना यात्राओं के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार कार्यों को बढ़ाया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि इन सारे कार्यक्रमों में आप सबका सहयोग अपेक्षित है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सबके सहयोग से आर्य समाज पुनः बहुत शीघ्र देश में अपना स्थान निश्चित करेगा।

इससे पूर्व श्री राजेश आर्य ने शहीद चन्द्रशेखर आजाद के जन्मदिवस पर विशेष भजनों द्वारा अत्यन्त सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उन्होंने चन्द्रशेखर आजाद तथा अन्य क्रांतिकारियों को अपने मनभावन गीतों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने शहीदों को स्मरण करते हुए जीवन में संकल्प लेने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि चन्द्रशेखर आजाद ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी लेकिन आज भी देश हिंसा, जातिवाद, कन्या भ्रूण हत्या तथा नशाखोरी जैसी बुराइयों से ग्रस्त है, हमें क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेकर इन कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए तथा इनको समाज से दूर करने के प्रयास करने चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी की अपील पर फरीदाबाद के आचार्य अमन सिंह शास्त्री तथा केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री महेश चन्द्र जी आर्य एवं उनके साथियों ने आश्वासन दिया कि फरीदाबाद से कम से कम 100 वेद सैट निश्चित रूप से बुक करेंगे। उनकी इस घोषणा का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

इस भव्य कार्यक्रम में श्री ओम प्रकाश शर्मा एडवोकेट, श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट, श्री सत्यभूषण आर्य एडवोकेट, श्री महेश चन्द्र आर्य -महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा, श्री अशोक शास्त्री-कोषाध्यक्ष, श्री वीरेन्द्र शास्त्री-प्रधान आर्य केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, फरीदाबाद, मुकेन्द्र कुमार आर्य, लाला मेघराज आर्य, श्री नन्दलाल कालड़ा, श्री कुलभूषण आर्य बल्लभगढ़, श्री वी. के. आर्य-पलवल, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री-बल्लभगढ़, आचार्य अमन सिंह शास्त्री, श्री मनोज सुमन महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री सत्यपाल शास्त्री प्रधान शिक्षक, श्री सुधीर कपूर, सत्यपाल रहेजा, कोषाध्यक्ष श्री विरजानन्द, आचार्य सन्तराम आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आदि महानुभाव उपस्थित थे। शान्ति पाठ तथा प्रीतिभोज के उपरान्त कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पं. माया प्रकाश त्यागी सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष नियुक्त

वैद्य इन्द्रदेव, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री तथा श्रीमती इन्दुबाला को उपप्रधान का पदभार प्रदान किया गया

श्री मधुर प्रकाश एवं श्री गोविन्द सिंह भण्डारी सभा के उपमंत्री बनाये गये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2 के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा के विभिन्न कारणों से रिक्त हुए स्थानों को अन्तरंग सभा की अनुमति से पूर्ति करते हुए वैद्य इन्द्रदेव, आचार्य प्रेम पाल शास्त्री तथा श्रीमती इन्दुबाला जी को सभा का उपप्रधान नियुक्त किया है। पं. माया प्रकाश त्यागी सभा के कोषाध्यक्ष नियुक्त किये गये। श्री मधुर प्रकाश एवं श्री गोविन्द सिंह भण्डारी को सभा उपमंत्री बनाया गया है। इन महानुभावों के अतिरिक्त श्री जगदीश सूर्यवंशी, डॉ. अनिल आर्य, आचार्य सन्तराम आर्य, प्रो. श्योताज सिंह तथा श्री रमाकान्त सारस्वत को सभा का अन्तरंग सदस्य नियुक्त किया गया है।

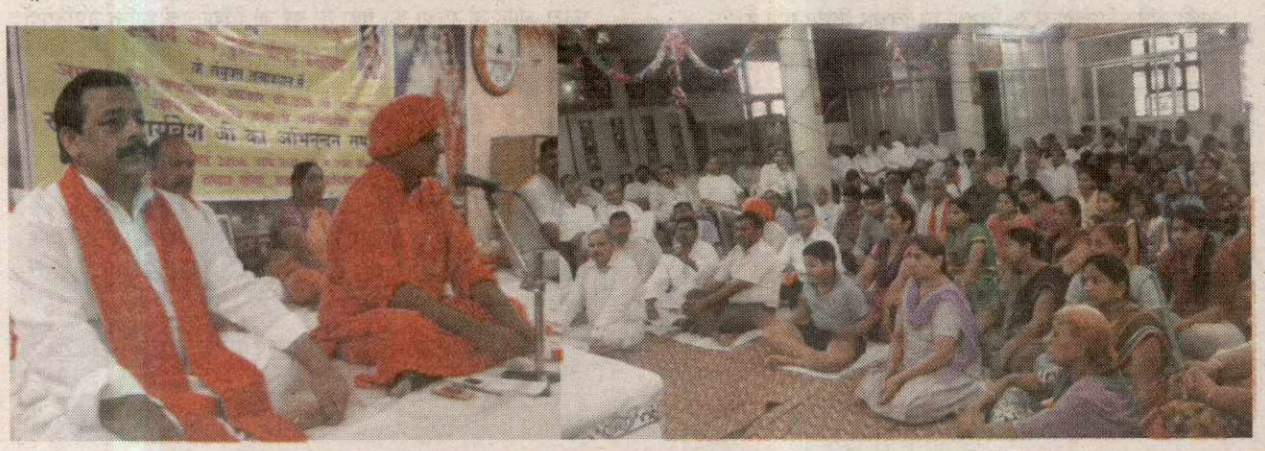

सम्पादक - पो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

उपनिषद् परिचय व उनका प्रभाव

- श्री जसवन्त राय गुगलानी

उपनिषद् शब्द का अर्थ : उप का अर्थ 'समीप' तथा निषद् का अर्थ बैठता है। ब्रह्म ज्ञानियों के समीप बैठकर अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करना। सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय का ज्ञान, परम सत्ता क्या है?पर और अपर ब्रह्म क्या है?ब्रह्म की प्राप्ति कैसे हो सकती है?शरीर-आत्मा, आत्मा-परमात्मा आदि के सम्बन्धों का ज्ञान इन उपनिषदों में वर्णित है। उपनिषदों में आख्यायिकों के माध्यम से विवेचन ने इनको रोचक बना दिया।

उपनिषद् कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं हैं अपितु वेद के संदेशों को सरल भाषा में ब्रह्मवेत्ताओं ने प्रस्तुत किया है। जैसे महाभारत के भीष्म पर्व के 22वें अध्याय से 42वें अध्याय तक के 18 (अठारह) अध्यायों को गीता के नाम से जाना जाता है वैसे ही उपनिषद् भी वेद, वेद शाखाओं व ब्राह्मण ग्रंथों के विशेष अंशों को लेकर लिखे गये हैं। पौराणिक जगत् में इन्हें 'वेदान्त' नाम से भी जाना जाता है। ये वस्तुत: वेद संदेश ही तो हैं। पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उदाहरण के रूप में कहते हैं जैसे गंगा नदी से निकली नहर में भी जल तो गंगा का ही तो है।

उपनिषदों की संख्या - नये पुराने उपनिषदों की संख्या 200 से अधिक है। महर्षि दयानन्द ने ग्यारह उपनिषदों को प्रामाणिक माना है। स्वामी शंकराचार्य ने इनमें से दस का भाष्य किया है। ये प्रामाणिक उपनिषद् हैं - (1) ईशोपनिषद् (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद् (5) मुण्डकोपनिषद् (6) माण्डूक्योपनिषद् (7) ऐतरेय उपनिषद् (8) तैत्तिरीयोपनिषद् (9) छान्दोग्योपनिषद् (10) वृहदारण्यकोपनिषद् (11) श्वेताश्वतरोपनिषद्।

उपनिषद् की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि अन्य मत-मतान्तर भी अपने-अपने आध्यात्मिक ग्रन्थों को उपनिषद् नाम देने लगे। यहाँ तक कि अल्लोपनिषद् भी रचा गया।

उपनिषदों के विषय

ईशोपनिषद् - इस उपनिषद् में ईश्वर व जगत् के स्वरूप का वर्णन किया गया है। ईश्वर की सर्व- व्यापकता व नित्यता तथा जगत की अनित्यता, गतिशीलता तथा जड़ता के बारे में व्याख्या की गई है। इसमें यह भी समझाया गया है कि संसार के सभी पदार्थ ईश्वर के हैं, हमारे नहीं। परमात्मा ने सभी पदार्थ मनुष्य के भोग के लिए ही प्रदान किये हैं। यह धन मनुष्य के पास ईश्वर की धरोहर है। मनुष्य लालच न करें। वह ईश्वर प्रदत्त इस धन का भोग त्याग भाव से करें।

केनोपनिषद् - इस उपनिषद् में परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता का वर्णन आख्यायिकाओं द्वारा किया गया है। उपनिषद्कार ने आत्मा को नेत्रों का नेत्र तथा श्रोत्र का भी श्रोत्र बताया है। यह आत्मा चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता और न ही उसे वाणी से प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर इंद्रियों का विषय नहीं है और न ही आत्मा इंद्रियों का विषय है। उपनिषद्कार ब्रह्म के विषय में लिखता है कि ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान किसी को नहीं हो सकता। इस उपनिषद् में ब्रह्म प्राप्ति के साधन तप और दम को बताया है।

कठोपनिषद् - इस उपनिषद् में यम व नचिकेता के संवाद को प्रस्तुत किया गया है। यमाचार्य, नचिकेता को तीन वर मांगने के लिए कहता है अपने तीसरे वर में नचिकेता आचार्य से मनुष्य के मरने के बाद की स्थिति के बारे में जानना चाहता है। वह पूछता है कि मरता शरीर है या आत्मा। मरने के उपरान्त आत्मा कहाँ जाता है। प्रथम तो आचार्य उसकी परीक्षा लेने के हेतु उसे कोई और प्रश्न पूछने को कहता है। उसे विभिन्न प्रलोभन देकर इस प्रश्न को न पूछने का आग्रह करता है। नचिकेता के न मानने पर तथा उसकी दृढ़ता को दृष्टिगत करते हुए शरीर की नश्वरता तथा आत्मा की अमरता की बात समझाता है। यमाचार्य उसको श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग का अन्तर बताता है। ईश्वर के निज नाम ओ३म् की महत्ता तथा उसके जप से क्या लाभ हो सकता है का वर्णन किया गया है।

प्रश्नोपनिषद् - इस उपनिषद् में 6 जिज्ञासु (1) सुकेश (2) सत्यकाम (3) गार्ग्य (4) कौशल्य (5) वैदर्भी (6) कबन्धी, आचार्य पिप्पलाद से ब्रह्म विद्या के बारे में प्रश्न करते हैं।

इन्होंने जो प्रश्न आचार्य के सम्मुख रखे वे इस प्रकार हैं - यह सारा संसार किससे उत्पन्न हुआ, कितने देवता इस सृष्टि को धारण कर रहे हैं?कौन सा देव मुख्य है?प्राण कहां से और किससे उत्पन्न होता?प्राणों के नाम और स्थान?प्राणों के कार्य क्या हैं?कौन सोता है, कौन जागरित रहता, सुषुप्ति अवस्था क्या है?सुख किसको होता है?अपर ब्रह्म और पर ब्रह्म क्या है?ओंकार के ध्यान से क्या लाभ है?सोलहकला युक्त कौन है?वे सोलह कलाएं कौन सी हैं?

मुण्डकोपनिषद् - समस्त अविद्याओं-अन्धविश्वासों आदि को मूण्डने, समाप्त करने के कारण इस उपनिषद् को मुण्डकोपनिषद् कहते हैं। इसमें पर विद्या, अपर विद्या क्या है?प्रकृति व ब्रह्म का वर्णन, ब्रह्म प्राप्ति से लाभ, त्रैतवाद, ब्रह्म प्राप्तकर्ता के लक्षण आदि विषयों का सुन्दर वर्णन इस उपनिषद् में किया गया है।

माण्डूक्योपनिषद् - इसमें केवल बारह श्लोक हैं। इसमें ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् की व्याख्या की गई है। आत्मा की चतुर्विध अवस्था का वर्णन इसमें किया गया है। तीन अवस्थायें एवं तीन शरीर-स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर, ब्रह्म की तीन अवस्थाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है, श्री गौड़पादाचार्य ने इस पर कारिकायें (श्लोक) लिखी हैं जिससे यह उपनिषद् लोकप्रिय हो गया है।

ऐतरेयोपनिषद् - इसमें ब्रह्म विद्या का वर्णन है। सृष्टि के निर्माण में पाँच लोकों का निर्माण का वर्णन। परमात्मा द्वारा सृष्टि के निर्माण के प्रयोजन की व्याख्या। संसार के पदार्थ तथा उनका उपभोग करने वाला कौन है तथा वह कैसा होना चाहिए। ब्रह्म और ब्रह्माण्ड की चर्चा। मनुष्य शरीर की महत्ता का वर्णन। जड़ और चेतन की रचना एवं उनमें भेद। इस उपनिषद् में अन्न के महत्त्व को तथा भूख और प्यास के प्रभाव को दर्शाया गया है। भूख और प्यास के स्थान, अपान वायु के कर्त्तव्य, शुक्र-वीर्य के महत्त्व की, संस्कारों के महत्त्व की तथा पुनर्जन्म आदि की शंकाओं का उपनिषद्कार ने समाधान किया है।

तैत्तरीयोपनिषद् - इस उपनिषद् में 3 भाग हैं। प्रत्येक भाग को वल्ली कहा गया है। ये 3 वल्लियाँ है। - (1) शिक्षा वल्ली, (2) ब्रह्मानन्द वल्ली, (3) भृगुवल्ली।

शिक्षा वल्ली - इसमें शिक्षा के बारे में वर्णन है। वर्ण एवं स्वर ज्ञान, मात्रा ज्ञान, स्वाध्याय और प्रवचन पर बल, ऋत और सत्य के अर्थ तथा इनमें भेद, तप, दम व शम का महत्त्व, माता-पिता व गुरु भक्ति की व्याख्या सुन्दर ढंग से की है।

ब्रह्मानन्द वल्ली - गुरु शिष्य की प्रतिज्ञा, ब्रह्म के स्वरूप, सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय कैसे होती है, पंचकोश तथा उनका उद्देश्य - (1) अन्नमय कोष (2) प्राणमय कोष (3) मनोमय कोष (4) विज्ञानमय कोष (5) आनन्दमय कोष की सुन्दर व्याख्या की गई है।

उपनिषद् कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं हैं अपितु वेद के संदेशों को सरल भाषा में ब्रह्मवेत्ताओं ने प्रस्तुत किया है। जैसे महाभारत के भीष्म पर्व के 22वें अध्याय से 42वें अध्याय तक के 18 (अठारह) अध्यायों को गीता के नाम से जाना जाता है वैसे ही उपनिषद् भी वेद, वेद शाखाओं व ब्राह्मण ग्रंथों के विशेष अंशों को लेकर लिखे गये हैं। पौराणिक जगत् में इन्हें 'वेदान्त' नाम से भी जाना जाता है। ये वस्तुत: वेद संदेश ही तो हैं। पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उदाहरण के रूप में कहते हैं जैसे गंगा नदी से निकली नहर में भी जल तो गंगा का ही तो है।

भृगु वल्ली - वरुण के पुत्र भृगु के अपने पिता से इन विषयों पर प्रश्न किये गये - भौतिकवाद व अध्यात्मवाद, प्रेय मार्ग व श्रेय मार्ग जैसे विषयों पर पिता के समाधान के माध्यम से उपनिषद्कार ने प्रस्तुत किये हैं।

छान्दोग्योपनिषद् - सामवेद के ब्राह्मण ग्रन्थ के प्रारम्भिक दो अध्यायों को छोड़कर शेष भाग छान्दोग्योपनिषद् है। इसमें अधोलिखित विषयों पर सारपूर्ण चर्चा हैं :-

ओ३म् की महत्ता, उद्गीथ का अर्थ एवं उपासना, प्राणों का महत्त्व, देवों और असुरों में भेद, सामगान के प्राण, धर्म के तीन आधार यज्ञ अध्ययन व दान पर तथा वसु आदित्य व रूद्र की चर्चा। संवर्ग विद्या क्या है?सत्यकाम जाबाल की कथा सत्य का प्रभाव, अश्वपति की अपने राज्य में सद्गुणों की चर्चा श्वेतकेतु की कक्षा में सत् और असत् के भेद दर्शाना, नारद द्वारा सन्त कुमार से आध्यात्म ज्ञान प्राप्ति हेतु जाने का आख्यान, देवताओं के राजा इन्द्र तथा असुरों के प्रतिनिधि विरोचन द्वारा प्रजापति से आत्मा के स्वरूप को जानना आदि अनेकों अध्यात्म के विषयों पर विचार किया गया है।

बृहदारण्यक - शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्यायों को बृहदारण्यक कहते हैं। इस उपनिषद् में गोमेध, अश्वमेध व नरमेध यज्ञों में इन शब्दों के अर्थों के अनर्थों को उजागर किया गया है। ब्रह्म के मूर्त व अमूर्त रूप का वर्णन किया गया है। ऋषि याज्ञवल्क्य से प्रश्नोत्तर। गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच प्रश्नोत्तर। जनक और याज्ञवल्क्य का संवाद। याज्ञवल्क्य द्वारा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीय अवस्था का वर्णन।

श्वेताश्वतर उपनिषद् - इसकी रचना पद्यों में हुई है। इसमें 6 अध्याय तथा 113 पद्य हैं। इसके अनेक पद्य अन्य ग्रन्थों में भी पाये जाते हैं। इस उपनिषद् में चर्चित विषय हैं - सृष्टि का कारण, प्रकृति-जीव-ब्रह्म, प्राणायाम के स्थान व लाभ, अज-अजा व वृक्ष तथा दो पक्षियों की आख्यायिकाएं, त्रैतवाद, दु:ख का अन्त आदि।

उपनिषदों के भाष्य एवं अनुवाद - दारा शिकोह जो कि मुगल बादशाह शाहजहां का बेटा तथा औरंगजेब के भाई ने 52 उपनिषदों का अनुवाद सन् 1657 से 1674 तक अर्थात् 18 वर्ष में फारसी में किया। इस अनुवाद को सिर्रे-अकबर के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है महान् रहस्य।

सन् 1757 में यानी 80 वर्ष से भी अधिक समय के बाद एक फ्रांसीसी सज्जन जरियाल ने फारसी के अनुवाद को देखा और उस पर मोहित हो गया। उन्होंने इस अनुवाद किये उपनिषदों को फ्रांसीसी भाषा में अनूदित किया।

योरोपियन विद्वान् ड्यूपोरो ने उपनिषदों का अनुवाद जर्मन तथा लैटिन-भाषा में किया। मैक्समूलर ने उपनिषदों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया जिसका नाम उसने 'सेक्रेड बुक्स ऑफ दि ईस्ट' नाम से उसने 12 उपनिषदों का अनुवाद किया। यह अनुवाद उसने 5 वर्षों में किया।

सन् 1816 से 1819 के बीच राजा राम मोहन राय ने भी अंग्रेजी में इनका अनुवाद किया।

उपनिषदों की लोकप्रियता बढ़ती गयी और इनका अनुवाद भिन्न-भिन्न भाषाओं में होता गया। इनकी लोकप्रियता के परिणाम स्वरूप अन्य मत वाले भी अपनी अध्यात्म की पुस्तकों का नाम उपनिषद् रखने लग गये। यहाँ तक कि अल्लोपनिषद् की रचना इस्लामिक बन्धुओं द्वारा कर दी गई।

उपनिषदों का प्रभाव - दारा शिकोह ने लिखा उसने अध्यात्म की बहुत सी पुस्तकें पढ़ी, कुरान, तौरेत, अंजलि, जबर आदि पढ़े परन्तु मन को शान्ति प्राप्त नहीं हुई।

दारा शिकोह की भतीजी, शहंशाह औरंगजेब की पुत्री जिसका नाम जेबुन्निसा था, अपने चच्चा दारा शिकोह के पास बैठकर उपनिषदों के उपदेश सुना करती थी। जरा देखिए कि इन उपदेशों का असर उसके मन पर कितना पड़ा। एक चीन के व्यापारी ने औरंगजेब को एक दर्पण भेंट किया। उसने वह दर्पण अपनी पुत्री जेबुन्निसा को भेज दिया। उस दर्पण में अपना मुख देखकरशृंगार किया करती थी। एक दिन शहजादी ने अपनी दासी को वह आईना लाने को कहा। दासी जब दर्पण ला रही थी, वह दर्पण उसके हाथ से गिर गया और टूट गया। वह घबरा गई कि अब तो शहजादी बहुत दण्ड देगी। देर होती देख शहजादी ने दासी को पुन: दर्पण शीघ्र ही लाने का हुक्म दिया। दासी डरती-डरती शहजादी के निकट आई और बोली - 'अज कजा आईनाये चीनी शिकस्त' अर्थात् मेरी शामत आई है क्योंकि मेरे हाथ से चीनी दर्पण टूट गया। इस पर शहजादी क्रोधित न होकर, मुस्कराते हुए बोली - 'अज कजा आईनाये चीनी शिकस्त, खूब शुद सामाने खुदबीनी शिकस्त।' अर्थात् चीनी शीशा टूट गया, अच्छा हुआ मेरे अभिमान का सामान समाप्त हो गया। यह था उपनिषदों के उपदेश का प्रभाव।

दारा शिकोह उपनिषदों से इतना प्रभावित हुआ कि उसके मतावलम्बी उसे काफिर कहने लगे। उपनिषदों के अध्यात्म ज्ञान के मोह में उसे शाही तख्त और अपनी जान तक गंवानी पड़ी।

जर्मनी के विद्वान् शौपनहार ने लिखा, 'उपनिषदों से मेरी आत्मा को शान्ति मिली है और मरने के पश्चात् भी इन्हीं से शान्ति मिलेगी।

प्रोफेसर मैक्समूलर लिखते हैं - उपनिषदों के ज्ञान के फलस्वरूप मेरे जीवन में बहुत सुधार हुआ है। उपनिषद् महान् बुद्धि वालों का फल है। हमारा ईसाई मत इसके सामने जड़ नहीं पकड़ सकता।

स्वीडन के विद्वान पाल ड्यूसन का मत है कि उपनिषदों के ज्ञान से प्रतिक्षण जीवन में ऐसी शान्ति मिलती है जैसी और कहीं पर उपलब्ध नहीं।

मि. ह्यूम ने अपनी पुस्तक Dogmas of Buddhism में लिखा है कि उन्होंने बड़े-बड़े दार्शनिकों अरस्तु, अफलातून, सुक्रात, प्लेटो आदि के ग्रन्थों को पढ़ा है, पर जो विद्या एवं शान्ति उपनिषदों से प्राप्त हुई है वह अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं।

श्री जी. आर्क ने अपनी पुस्तक Is God Knowable में लिखा है कि मनुष्य की मानसिक, आत्मिक, सामाजिक आवश्यकताएं कैसे पूर्ण होती है का सुन्दर विवरण उपनिषदों में दिया गया है।

अन्तत: मैं पाठक वृन्द से साग्रह अनुरोध करूँगा कि वैदिक साहित्य का अध्ययन करके अपनी सभी समस्याओं का निराकरण करें।

- म. नं.-91/4, अर्बन एस्टेट, गुड़गांव-122001
(हरियाणा)
मो.:-9999667647

thearyasamaj.org

हिन्दुत्व की ठेकेदारी

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

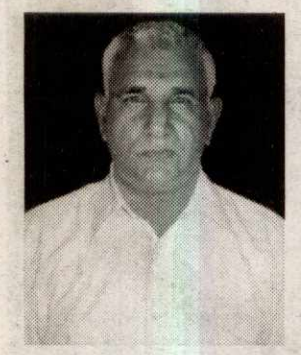

ज्योतिष व द्वारका-शारदा पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने चातुर्मास में कनखल (हरिद्वार) स्थित शंकराचार्य निवास में पत्रकारों के समक्ष शिरडी के साईं बाबा के सम्बन्ध में जो हिदायतें हिन्दू समाज को दी हैं उनका सारांश निम्न प्रकार है :-

(क) साईं बाबा का सनातन धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(ख) उनके नाम पर ट्रस्ट चलाने वालों में दूसरे धर्म (इस्लाम व जैन) के लोग भी हैं।

(ग) हिन्दू देवता के रूप में साईं को गढ़ा जा रहा है जो अनुचित है।

(घ) साईं बाबा न गुरु थे और न ही अवतार, वे चमत्कारी पुरुष थे।

(ङ) साईं भक्ति अंधविश्वास के सिवाय कुछ नहीं है।

(च) साईं के मंदिर बनाकर पूजा-अर्चना करना सनातन धर्म के विरुद्ध है।

(छ) साईं पूजा संक्रामक रोग की तरह बढ़ रही है जिससे हिन्दू समाज बंटेगा।

(ज) साईं हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक नहीं हैं।

(झ) साईं-भक्ति से राम मन्दिर निर्माण की मुहिम कमजोर पड़ेगी।

(ञ) जिन्हें धर्म का ज्ञान नहीं वे साईं भक्ति की बात कह रहे हैं।

(ट) अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ लोग यह अंधविश्वास फैला रहे हैं।

(ठ) वेद-पुराणों में कहीं भी साईं के अवतार का उल्लेख नहीं है।

(ड) कुछ लोग घरों व मंदिरों में साईं की मूर्ति लगा रहे हैं, यह ईश्वर की आराधना नहीं है।

(ढ) सनातनी परम्परा में सभी देवताओं के मंत्र और तंत्र हैं, साईं के नहीं है।

(ण) हिन्दू धर्म में साईं-भक्ति की मिलावट असहनीय है।

(त) साईं को उच्चासन देना अशोभनीय है।

(थ) अपने विश्वास, श्रद्धा, आस्था के अनुसार साईं-भक्त अलग मन्दिर बनाते हैं तो हमें एतराज नहीं है लेकिन जब साईं की मूर्ति व चित्र गुरुद्वारों, गिरजाघरों व मस्ज़िदों में नहीं लग रहे हैं तो हिन्दू मन्दिरों में क्यों लग रहे हैं?

(द) कुछ लोग हमसे ही सीखकर हमारे गुरु बन रहे हैं।

(ध) साईं भक्त राम की पूजा करना बन्द करें, गंगा स्नान भी न करें और हर-हर महादेव का जय भी छोड़ दें।

(न) साईं का गायत्री-मन्त्र बनाना अनधिकृत चेष्टा है।

उपर्युक्त बयान देने वाले शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती अकेले नहीं हैं। उनके समर्थन में उतरने वाले आचार्यों और महामंडलेश्वरों की संख्या दिन व दिन बढ़ती जा रही है। स्वामी स्वरूपानन्द जी का आह्वान है कि जैसे कल्पित देवी गणेश जी की पुत्री जय संतोषी माता को हमने सनातन धर्म से नाम शेष कर दिया है वैसे ही साईं भक्ति को सनातन धर्म से निष्कासित किया जाना चाहिए। उनके समर्थन में कोई दूसरा शंकराचार्य अभी नहीं उतरा है, लेकिन किसी शंकराचार्य ने अभी तक उनका विरोध भी नहीं किया है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् के राष्ट्रीय प्रवक्ता बाबा हठयोगी, विश्व सनातन धर्म परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत सुरेन्द्रनाथ अवधूत, स्वामी रामानन्दचार्य हंसदेवाचार्य, महामण्डलेश्वर स्वामी हरिचेतनानन्द महाराज, दक्षिण काली मन्दिर सिद्धपीठ के परमाध्यक्ष महामण्डलेश्वर कैलाशानन्द ब्रह्मचारी, चेतन ज्योति आश्रम के परमाध्यक्ष स्वामी ऋषिश्वरानन्द, भूमा निकेतन के परमाध्यक्ष स्वामी अच्युतानन्द तीर्थ, साध्वी उमा भारती के गुरु कर्नाटक स्थित उडिपी में पेजावर मठ के परमाध्यक्ष स्वामी विश्वेषतीर्थ, अखिल भरतीय संत समिति के राष्ट्रीय मंत्री व जूना अखाड़े के महामण्डलेश्वर स्वामी प्रेमानन्द, हरेराम आश्रम कनखल के परमाध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी कपिल मुनि, हरिसेवा आश्रम के परमाध्यक्ष महामंडलेश्वर हरिचेतनानन्द महाराज, स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द, भारत साधु समाज के राष्ट्रीय महामन्त्री स्वामी हरिनारायण नन्द, महादेव महाराज, महामंडलेश्वर अर्जुनपुरी, महामंडलेश्वर स्वामी विवेकानन्द, महामण्डलेश्वर स्वामी दिव्यानन्द आदि की विस्तृत सूची है जिन्होंने कहा है कि शिरडी के साईं बाबा संत, फकीर, चमत्कारी व्यक्ति हो सकते हैं, उन पर कुछ लोग विश्वास, श्रद्धा, आस्था रख सकते हैं, उनकी पूजा अर्चना कर सकते हैं। हमारा एतराज इन बातों को लेकर नहीं है बल्कि इस बात को लेकर है कि सनातन धर्म मन्दिरों में हिन्दू देवी-देवताओं के समकक्ष अथवा उच्चासन पर उन्हें विराजमान करके अधिष्ठित किया जा रहा है जो हमारी शास्त्रीय परम्परा, शास्त्रीय विधि-विधान और हमारी आस्था पर सीधा प्रहार है। शिरडी के साईं मूलत: हिन्दू नहीं मुस्लिम थे, अपने भक्तों व शिष्यों को बकरे का मांस खिलाकर दीक्षा देते थे, कुरआन का पाठ करते थे। ऐसा भी प्रचारित किया जा रहा है। उनका प्रारम्भिक जीवन अज्ञात है लेकिन उनके जन्म स्थान तक का जिक्र करते हुए यहां तक कहा जा रहा है कि हैदराबाद की रियासत निजाम में वे दो-चार बार चोरी करते पकड़े गये थे। अन्त में उनके मस्तक पर 'चोर' शब्द गोदवा कर उन्हें रियासत से निष्कासित कर दिया गया था। इसी कारण वे अपने मस्तक पर पट्टी बांधे रखते थे। इन आरोपों में कितना सच या झूठ है इसकी खोज अपेक्षित है। सम्भव है उनका प्रारम्भिक जीवन प्रेरक न रहा हो और अंतिम जीवन में फकीरी अपना कर चमत्कारी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों। योग दर्शन में भी अनेक सिद्धियों का उल्लेख मिलता है जिन पर सहज विश्वास नहीं होता। इन सिद्धियों व विभूतियों के प्रदर्शन का वहाँ निषेध है क्योंकि सिद्धियाँ हमारी साधना का स्तर निर्धारित करती हैं और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इनका प्रदर्शन करने व लाभ उठाने से साधना का मार्ग अवरुद्ध होता है और ऐसे साधक को भ्रष्ट योगी की संज्ञा मिलती है। योग-विद्या को इसी कारण गुप्त विद्या माना गया है, प्रदर्शन की कला नहीं। इससे इतना तो स्पष्ट है कि सिद्ध व चमत्कारी पुरुष भ्रष्ट योगी हो सकता है अवतारी पुरुष अथवा ईश्वर नहीं। संसार में पहले भी अनेक ऐसे व्यक्ति हुए हैं और आज भी हैं जो सबसे अलग, विरल, अद्भुत क्षमता रखते हैं। हमारे मस्तिष्क का कुछेक भाग ही सक्रिय रहता है और जब वह अधिक सक्रियता से काम करने लगता है तो कोई न कोई आविष्कार जन्म लेता है। कई लोगों के पूर्व जन्म के संस्कार जाग जाते हैं और वे अद्भुत और विचित्र व्यक्तित्व के साथ प्रकट होते हैं जैसे कि बालक कौटिल्य। शिरडी के साईं सिद्ध फकीर रहे होंगे, इतना तो माना जा सकता है लेकिन इससे वे ईश्वर या अवतार नहीं हो जाते। उनका विरोध करने वाले उनके जीवन में भी रहे थे। शिरडी के साईं को कोई व्यक्ति किस रूप में अपनाता है यह उसके अपने विश्वास, श्रद्धा, आस्था का विषय है। यह विषय इतना संवेदनशील है कि तर्क, विज्ञान, अध्यात्म उसका खण्डन करे तो भी कुछ फर्क नहीं पड़ता। व्यक्ति पूजा और वह भी ईश्वर के समकक्ष उचित नहीं मानी जा सकती क्योंकि अन्तत: वह साम्प्रदायिकता अथवा नास्तिकता का कारण बनती है अध्यात्म अथवा ईश-भक्ति का नहीं। यही अलगाववाद कई बार उग्र हिंसक व आतंकी तक बन जाता है। आज का युग भौतिकता का है, स्वार्थ का है, प्रचार का है, तन्त्र का है, संसाधनों का है अत: भीड़ को देखकर प्रदर्शन को देखकर अनुमान लगाना कठिन है कि सच क्या है और झूठ क्या है?आज से 60-70 वर्ष पूर्व के काल-खण्ड पर यदि हम दृष्टिपात करें तो न कहीं हमें वैष्णो देवी का नाम सुनाई देता था और न ही शिरडी के साईं का। आज से 10-20 वर्ष पहले उत्तर भारत में शनिदेव का एक भी मन्दिर नहीं था आज हजारों खड़े हो गये हैं। कारण टेलीविजन के चैनलों पर शनिदेव का नियमित रूप से प्रचार होना। विदेश में ऐसा नहीं हो रहा क्योंकि वहाँ इस प्रकार का प्रचार नहीं है। ये सारे देवी-देवता भारत में ही क्यों जन्में हैं क्या रूस और चीन सदा से कम्युनिष्ट देश थे?क्या उनको इनकी जरूरत नहीं है?इनके बिना वे अपना विकास कैसे कर पा रहे हैं?

यह विषय इतना संवेदनशील है कि तर्क, विज्ञान, अध्यात्म उसका खण्डन करे तो भी कुछ फर्क नहीं पड़ता। व्यक्ति पूजा और वह भी ईश्वर के समकक्ष उचित नहीं मानी जा सकती क्योंकि अन्तत: वह साम्प्रदायिकता अथवा नास्तिकता का कारण बनती है अध्यात्म अथवा ईश-भक्ति का नहीं। यही अलगाववाद कई बार उग्र हिंसक व आतंकी तक बन जाता है। आज का युग भौतिकता का है, स्वार्थ का है, प्रचार का है, तन्त्र का है, संसाधनों का है अत: भीड़ को देखकर प्रदर्शन को देखकर अनुमान लगाना कठिन है कि सच क्या है और झूठ क्या है?

शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती ने जिस अधिकार भावना से अपनी बात कही है उसका हम खण्डन नहीं करते क्योंकि उनके अपने सम्प्रदाय में यदि कहीं पतन, गिरावट, मिलावट होती है तो धर्माचार्य के रूप में सुरक्षात्मक कदम उठाना उनका नैतिक कर्त्तव्य है। लेकिन हमारी आपत्ति यह है कि हिन्दुत्व की ठेकेदारी क्या केवल शंकराचार्य तक सीमित मान ली जानी चाहिए?क्या इस हिन्दुत्व का कोई ठोस व स्पष्ट चेहरा भी है अथवा नहीं?क्या इसका कोई एक मार्गदर्शक, धर्मग्रन्थ, कोई एक दर्शन, कोई एक आचार संहिता भी है अथवा नहीं?वह ईश्वर के निराकार और साकार रूप को एक साथ लेकर कैसे चल सकता है?जिस समन्वयवाद को उसकी ताकत माना जाता है वही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी बन कर क्यों उभरती है?अभी पिछले दिनों नई दिल्ली में 'हिन्दू एनसाइक्लोपीडिया' का प्रकशनोद्घाटन करते हुए डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उद्धृत करते हुए महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने कहा है कि हिन्दुत्व तर्क और भावना का ऐसा मेल है, जिसे परिभाषित नहीं किया जा सकता, इसका अनुभव ही किया जा सकता है।'' शायद इसीलिए सुप्रीम कोर्ट ने यह व्यवस्था दी थी कि - 'हिन्दू एक जीवन शैली है, न कि पंथ, उपासना पद्धति की तर्ज पर धर्म।'' यदि वास्तविकता यही है तो फिर हिन्दुत्व की ठेकेदारी चंद हाथों में कैद कैसे रह सकती है और शिरडी के साईं बाबा के भक्तों को शंकराचार्य जी की हिदायतों की परवाह क्यों होनी चाहिए?कुछ संतों ने मांग भी उठाई है कि शंकराचार्य देर से जागे हैं, शिरडी साईं के भक्तों को छोड़िये, अनेक हिन्दू संत खुद को ईश्वर के समकक्ष रख कर अपने को पुजवा रहे हैं, पहले घर का यह पाखण्ड तो दूर होना चाहिए, इस पर शंकराचार्य जी मौन और निष्क्रिय क्यों हैं?

– शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

शादी का वादा नहीं, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध अभियान चाहिए

– डॉ. विनोद बब्बर

पिछले दिनों हरियाणा के एक नेता ने आगामी चुनाव में अपनी पार्टी की सरकार बनने पर किसी दूसरे राज्य से लड़कियां लाकर कुंवारों की शादी का वादा किया। स्वाभाविक है इस वक्तव्य की निन्दा, आलोचना होनी थी, हुई लेकिन यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न अनुत्तरित ही रहा कि ऐसी स्थिति ही क्यों हुई?कुंवारों की शादी करना किसी सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए या कन्या भ्रूण हत्या रोकना?

गत वर्ष एक बालक जिसे छुट्टियों के दौरान 'लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का रूप कैसा होगा' विषय पर एक अनुच्छेद लिखने को कहा था, मुझसे मिला। वह परेशान था कि उसकी समस्या सचमुच गंभीर है। सबसे पहले साधुवाद दूंगा उस स्कूल को जिसने देश के भावी कर्णधारों को आने वाले खतरों के प्रति जागरूक करने की कोशिश की। हो सकता है, कुछ लोग समय से पहले इस तरह की चर्चा करने के लिए मुझसे मिले। उसके अनुसार 'लगभग सभी ने उसके विद्यालय को दसवीं कक्षा के छात्रों के बीच इस मुद्दे की चर्चा को बुरा-भला तो कहा लेकिन किसी ने भी उसकी मदद नहीं की।'

लिंग अनुपात के खतरनाक स्तर तक पहुँच जाने के कारण पिछले कुछ वर्षों से हरियाणा लगातार चर्चा में है। वैसे हमारे समाज की विकृत तस्वीर प्रस्तुत करते ये आंकड़े केवल वहीं तक ही सीमित नहीं है। लगभग सारे भारत की यही स्थिति है। अनेक क्षेत्रों में तो स्थिति पूरी तरह हाथ से निकल चुकी है, जहां विवाह योग्य युवक कुंवारे हैं। अनेक स्थानों पर देश के पिछड़े हुए क्षेत्रों तथा सुदूर दक्षिण से बहुओं की 'व्यवस्था' करने के भी समाचार हैं। हरियाणा में केरल, उड़ीसा, बिहार से आई बहुओं की चर्चा होती ही रहती है। ऐसे में केरल की युवती जो जीवन भर इडली, डोसा, चावल आदि खाती रही हो, उसे एकाएक बाजरे की रोटी, रबड़ी खाने या बनाने के लिए कहना उसके साथ ज्यादती के अतिरिक्त और क्या है। हिन्दी भी न समझने वाली युवती को ठेठ हरियाणवी भाषा, पहनावे में 'घूंघट' को आप लाख राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बतायें, पर वास्तव में यह वही है उसी विषय के प्रभावों का अवलोकन है जिसके कारण उस नेता की जबान भटक गई और उसने 'फलां' राज्य से बहू दिलवाने का वादा किया। यह भटकन कल सारे समाज की अपराधिक समस्याओं का मूल बन जाए तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इसलिए कैसे बनेंगे नये जोड़े, कैसे बसेंगे घर, इस पर आज और अभी ही चिन्तन करना होगा।

कहना मुश्किल है कि वह नेताजी इस वास्तविक खतरे को कितना समझते हैं क्योंकि उनकी प्राथमिकता समाज को इस खतरे से बचाने से ज्यादा कुर्सी पाना है वरना वह 'महानुभाव' समाधान की बात करते। पर उन नेताजी का समझना, न समझना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना अपने आपको समझदार और आधुनिक कहे जाने वालों की चुप्पी। समाज में नित होने वाली कन्या भ्रूण हत्याओं के प्रति उनकी निष्क्रियता किसी जघन्यतम अपराध से कम नहीं है। उनकी इस गलती की सज़ा आने वाली पीढ़ियों को भुगतनी पड़ेगी।

बेशक सरकारें महिला आरक्षण विधेयक को संसद से पास करवाने का संकल्प दोहराती रहती हैं पर आज, जिस तरह से कन्या भ्रूण हत्या के रूप में पूरे समाज को जहर दिया जा रहा है, उस पर संकल्प कब होगा। यदि लिंग-अनुपात इसी तरह से गिरता रहा तो कहाँ से लायेंगे 33 प्रतिशत उम्मीदवार! 'आरक्षण' जरूरी है या 'रक्षण' इस पर सबसे पहले विचार होना चाहिए।

एक तरफ, कुंवारों के लिए बहू की व्यवस्था की चिंता तो दूसरी ओर इस देश में महिला भ्रूण हत्या से बजती खतरे की घंटी को सुनने वाले वास्तविक लोगों और संगठनों की संख्या कितनी है, कहना मुश्किल है क्योंकि बार-बार इस खतरे की चेतावनी दिये जाने और हर नर्सिंग होम में 'यहाँ भ्रूण लिंग जाँच नहीं होती' का बोर्ड लगा देने के बावजूद स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा है। ऐसे में जबकि महिला रक्षण ज्यादा जरूरी नजर आ रहा हो, केवल महिला आरक्षण का शोर कितना उचित है। इस पर विचार किया जाना जरूरी है।

महिला विरोधी मानसिकता के चलते देश भर की बात छोड़कर केवल राजधानी दिल्ली की स्थिति देखें, तो यहाँ भी लड़कों के मुकाबले लड़कियों के अनुपात में गिरावट आ रही है। प्रमुख महानगरों के बीच दिल्ली इस मामले में सबसे निचले पायदान पर खड़ी है। 1991 में 6 साल तक के बच्चों में लड़के 1000 थे, तो लड़कियों की संख्या 915 थी। 2001 में लड़कियों का अनुपात घटकर 865 पर पहुँच गया। आज स्थिति बदतर ही हुई है। 'अभी 500 रुपये खर्च करो या बाद में 5 लाख रुपये दहेज में जैसे विज्ञापनों वाली मानसिकता के चलते गर्भ में कन्या भ्रूण की हत्या कराई जा रही है। इसके अलावा, लड़के का जन्म प्रतिष्ठा से जुड़ा है, लड़के से ही वंश चलता है और अंतिम संस्कार पुत्र के हाथों होने से मोक्ष प्राप्त होता है, जैसी धारणाएं ही लड़की के जन्म को हिकारत की नजर से देखती है। केवल लड़कों के वंश चलाने की गलत सोच वाले यह भूल जाते हैं कि अगर लड़कियां ही नहीं होंगी, तो अपने साहिबजादे के लिए बहू कहाँ से लाओगे जो तुम्हारा वंश चला सके?मोक्ष की कामना वालों को सौ पुत्रों के पिता के हश्र और उसी के समकालीन आजीवन अविवाहित रहने वाले भीष्म के मोक्ष का उदाहरण समझ में क्यों नहीं आता?

देश में दहेज हत्याएं, नारी-उत्पीड़न, भेदभाव, बलात्कार, अपहरण और छेड़छाड़ की घटनाएं आम बात हैं। जब तक हम स्त्री-पुरुष के बीच समानता के महत्त्व को नहीं समझेंगे और इसी प्रकार का वातावरण बना रहेगा, तब तक नारी भ्रूण की रक्षा कैसे हो सकेगी?जो लोग महिलाओं को कमतर आंकते हैं, उन्हें अपने पौराणिक इतिहास और वर्तमान परिवेश से इस बात की जानकारी प्राप्त क्यों नहीं होती कि इस देश में जहाँ नारी की पूजा होती है, वहीं देवताओं का वास होता है' की मान्यता भी रही है।

जनसंख्या असंतुलन से चिंतित विशेषज्ञों के अनुसार, देश में लिंग अनुपात की स्थिति इससे कहीं ज्यादा खराब ऐसे प्रदेश में हैं जहाँ साक्षरता का प्रतिशत ठीक है, प्रति व्यक्ति आय बेहतर तथा चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार भी ज्यादा है। कहा जा सकता है कि कन्याएं यहाँ विकास की भेंट चढ़ गईं। इसके विपरीत, उन इलाकों में लड़कियों की संख्या में ज्यादा कमी नहीं आयी है जहाँ लोगों में साक्षरता का प्रतिशत कम है। उदाहरण के तौर पर देश में अच्छी जनसंख्या अनुपात वाले जो 10 जिले हैं, वहाँ स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार नहीं हो पाया है, वे भले ही विकास में पिछड़े हैं, लेकिन वहाँ के समाज और अर्थव्यवस्था में लड़कियों की महत्ता कायम है। भ्रूण हत्या को लेकर हालांकि देश में कड़ा कानून है। लेकिन, यह प्रभावी नहीं हो पा रहा है। यह कानून गर्भवती महिला को अल्ट्रासाउण्ड कराने से नहीं रोक सकता है क्योंकि उन्हें कई कारणों से इस जाँच की जरूरत पड़ती है।

यह भी जगजाहिर है कि कैसे 'जय माता दी' या 'जय श्रीकृष्ण' जैसे कोड वर्ड में गर्भस्थ शिशु के लिंग जांच का रिजल्ट बता दिया जाता है। दरअसल घटते लैंगिक अनुपात के कई सामाजिक-आर्थिक कारण भी हैं। मसलन, किफायत में सकून से जिंदगी जीने के छोटे परिवार के प्रति आग्रह का सबसे ज्यादा असर लिंग संतुलन पर पड़ा है और इस प्रकार बालक-बालिका का अनुपात बिगड़ता गया है। इस विकराल होती जा रही समस्या के निराकरण के लिए उन कारणों को तलाशना होगा कि आखिर क्यों लोग बेटा ही चाहते हैं। हमारे देश में वृद्धावस्था में सामाजिक सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। अगर कोई व्यक्ति बेटे को बुढ़ापे की लाठी समझता है, तो उसका सोचना गलत नहीं लगता है। पड़ोसी देश चीन ने इसे समझते हुए उन लोगों को वृद्धावस्था पेंशन देने का फैसला किया है जिनके सिर्फ बेटियाँ हैं। पर हमारी सरकारें इस विषय पर अब तक मौन हैं। इसी प्रकार हमारे समाज में लड़की के विवाह में दहेज की समस्या बहुत बड़ी है जिसे हमने बाकायदा मान्यता दे रखी है। लाख कोशिशों के बावजूद भी, दहेज लेना और देना शान समझते हैं। जब तक दहेज लेने वालों के साथ-साथ दहेज देने वालों के विरुद्ध भी अभियान नहीं छेड़ा जायेगा, इस कोढ़ से मुक्ति नहीं मिल सकती।

आज भी हर तरह के विरोधी वातावरण के बावजूद, महिलाएं बड़े से बड़े पदों पर काम कर रही हैं। वे जहाज उड़ाने से लेकर हर तरह की ट्रेनिंग भी ले सकती हैं, राजनीति व कॉरपोरेट सेक्टर में कार्यरत हैं, अपना बिजनेस चला रही हैं, अपनी कार-मकान की मालिक हैं। फिर कुशलता से घर चलाने वाली स्त्री तो लगभग हर घर में मौजूद है। सच तो यह है कि हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ मातृ शक्ति ही है जो खेत से लेकर पशु पालन तक हर जगह जी तोड़ मेहनत करती हैं।

कन्या भ्रूण हत्या के पाप को रोकने की जिम्मेदारी दिन-दुगनी, रात-चौगुनी गति से बढ़ रहे हमारे 'धार्मिक गुरुओं' को स्वीकार करनी चाहिए, वरना उनका 'आभा मंडल' भी प्रभावित होगा क्योंकि यह इस देश की मातृ शक्ति ही तो है जो अपने परिवार और बच्चों का पेट काट कर भी इन संतों के 'श्रीचरणों' में मोटी दक्षिणा चढ़ाती हैं, दिन-रात उनके गुण गाती हैं। ..... और चलते-चलते चर्चा फिर बात-बेबात रास्ता रोकने वालों की। मैंने आज तक कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में कभी रास्ता जाम अथवा जबरदस्त आंदोलन का समाचार नहीं सुना। सैकड़ों लोगों से भी इस विषय पर बात की। पर किसी ने भी सकारात्मक उत्तर नहीं दिया। इसे समाज की संवेदनहीनता माना जाए या कुछ और इसका उत्तर तलाशना ही होगा। तभी हम अपने आपको मानव कहलाये जाने योग्य साबित कर पायेंगे। तभी बचेगा संसार, परिवार और हमारे अपने बच्चों का घर, जिसे अपनी विकृत सोच वाले हमारे 'धनकड़' नष्ट करने पर आमादा हैं।

– लेखक राष्ट्र किंकर के संपादक हैं।

(नवोत्थान लेख सेवा, हिन्दुस्थान समाचार) से साभार

thearyasamaj.org

हिन्दू भगवानों को सांई बाबा से कैसा खतरा?

–स्वामी अग्निवेश

द्वारका पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज द्वारा पिछले दिनों शिरडी के सांई बाबा को हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार भगवान न मानने और उन्हें हिन्दू मंदिरों में न पूजने का निर्देश हास्यास्पद तो लगा पर साथ ही ईश्वरीय अवधारणा के अन्तर्गत 24 अवतारों को ईश्वर कोटि में पूजनीय बताना और प्रकारान्तर से समस्त मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध करने का प्रयास नितान्त गर्हित भी लगा।

महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित आर्यसमाज का एक विनम्र सेवक होने के नाते मैं इस विषय पर अपना दृष्टिकोण दे रहा हूँ। स्वामी स्वरूपानंद जी का निर्देश इसलिए भी मायने नहीं रखता कि जिसे हम हिन्दू समाज कहते हैं उसमें किसी शंकराचार्य की चाहे वे अपने आप को जगतगुरु ही क्यों न कहें, कैथोलिक सम्प्रदाय के अनुयायियों की तरह पोप जैसी मान्यता नहीं है। हिन्दुओं में आर्गेनाइन्ज्ड़ रिलीज़न की अवधारणा कभी नहीं रही। जातिवादी व्यवस्था में जन्मना ब्राह्मण का दर्जा ऊँचा तो हो गया पर किसी धार्मिक मान्यता पर निर्देश किसी का कोई स्वीकार नहीं करता। अलबत्ता पत्थर की मूर्तियों की मान्यता इतनी अधिक है कि यदि शुरू में कुछ चालाक लोग किसी मूर्ति विशेष की मनौती पूरी करने की क्षमता कानोंकान फैलाने लगें तो कुछ समय बाद उस मूर्ति पर चढ़ावा चढ़ाने वालों की अच्छी खासी जमात खड़ी हो जाती है, एक छोटी सी दुकान से आगे चलकर बड़ी इण्डस्ट्री लग जाती है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि मूर्ति सोने की हो या चांदी की, पत्थर की हो या पीतल की या फिर कुछ दिनों बाद पिघल जाने वाले बर्फ की।

महाराष्ट्र में शिरड़ी के सूफी संत सांई बाबा (शायद बचपन का नाम चांद मियाँ) अपने जीवन काल में फकीरों की तरह जिये, दिन पेड़ के नीचे, रात पुरानी टूटी मस्जिद में गुजारते। हिन्दू–मुसलमान का भेद न करते हुए सबको यही बताते "सबका मालिक एक"। दरअसल यह बात अति सामान्य लगती है पर व्यवहार में अलग–अलग सम्प्रदायों की दुकानों में रखे अलग–अलग रंग–रूप के 'मालिक' की तुलना में उनकी कथनी–करनी एक जैसी थी। एक सच्चे और अच्छे इन्सान की जिन्दगी जीकर उन्होंने आसपास के लोगों में ऐसी पहचान बना ली कि उनके मरने के बाद मुसलमानों ने तो उनकी मजार नहीं खड़ी की पर चमत्कारों के किस्से जोड़कर हिन्दुओं ने उनकी आकृति की मूर्ति बनाकर मंदिर खड़ा कर दिया। चित्र के बदले चरित्र की उपासना करनी चाहिये का मंत्र भूलकर न किसी मुसलमान ने (उनका सूफीयाना इन्सानियत का पैगाम लिया।) और न ही किसी हिन्दू ने (उनकी सादगी, सरलता का अनुसरण किया) जब मंदिर में मूर्ति लग गई तो मनौती मांगने वाले मूर्खों की भीड़ भी इकट्ठी होने लगी और देखते–देखते तकिया की जगह ईंट को सिरहाने लगाकर सोने वाले सांई बाबा के लिए सोने का सिंहासन बना दिया। आंख के अंधे और गांठ के पूरों के नेतृत्व में एक मंदिर से बढ़कर हजारों मंदिर खड़े होने लगे। अकेले शिरडी के मंदिर में सन् 2012–13 में लगभग 1100 करोड़ रुपये का चढ़ावा आ गया। जरूर कोई तगड़ा भक्त मिला होगा टी–सीरिज़ के तत्कालीन मालिक गुलशन कुमार जैसा जिन्होंने जय बैष्णों देवी के गीतों के कैसेट बजा–बजाकर, जय माता दी के नारों से जम्मू की पहाड़ियों को गुंजा दिया और कृपालु सरकार ने जम्मू से कटड़ा–बैष्णो देवी मंदिर तक रेल मार्ग प्रशस्त कर दिया। यही कृपालु सरकार है जो अमरनाथ की गुफा में कोई महीने भर के लिए प्रकट होने वाले बर्फानी बाबा के दर्शनार्थियों को 13500 फुट तक पहुँचने के लिए सड़क मार्ग, वायुमार्ग आदि तथा सुरक्षादि का प्रबंध करने में सदैव तत्पर रहती है। यह अलग बात है कि आक्सीजन की कमी और कुछ अन्य दुर्घटनाओं में हर साल अमरनाथ यात्रा में 200 के लगभग मौतें हो जाती हैं। पर देवाधिदेव महादेव के केदारनाथ मंदिर में तो पिछले साल कहर बरपा हो गया। चारधाम तीर्थ यात्रियों की कई–कई हजार मौतों को सरकार ने कम से कम कर बताया और साथ ही करोड़ों रुपये खर्च कर नये मार्ग, नई सुविधाओं का भी सृजन कर डाला। हिमालय के जिस पर्यावरणीय क्षति की वज़ह से विनाश लीला आई उसे सुधारने के लिए सरकार को कोई चिन्ता नहीं। जो परमेश्वर समूची सृष्टि के कण–कण में सर्वव्यापी और निराकार हर जीवात्मा में सर्वान्तर्यामी समान रूप से विराजमान है उसकी उपासना (उप आसन – नज़दीक बैठने के लिए) क्या अपने–अपने मन को मन्दिर बनाकर ध्यान करने से नहीं हो सकती?जब सबका मालिक एक है तो हिन्दू मंदिर के भगवानों को सांई मंदिर के भगवान से किस बात का खतरा है?जब धर्म सनातन है तो सार्वजनीन भी होगा, मानवमात्र के लिए एक जैसा कल्याणकारक होगा। फिर अलग से हिन्दू धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता क्यों?क्या असल मामला चढ़ावा कम–ज्यादा होने का है?गुरुओं की वाणी पूछ रही है– अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बंदे, एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले को मन्दे?समान प्रसवात्मिका जातिः के अनुसार मनुष्य मात्र जब एक जाति है, यत्र सकल विश्व भवेत्येक नीडम् अर्थात् सारा संसार एक घोंसला है तब गांव गुरुओं से लेकर कस्बा गुरु और जगतगुरु तक, ईश्वर को मानने वालों से लेकर अल्लाह, गॉड और वाहेगुरु मानने वालों तक सिर फुटव्वल के बदले आपसी बहन भाईचारा, सौमनस्य और सद्व्यवहार क्यों नहीं?

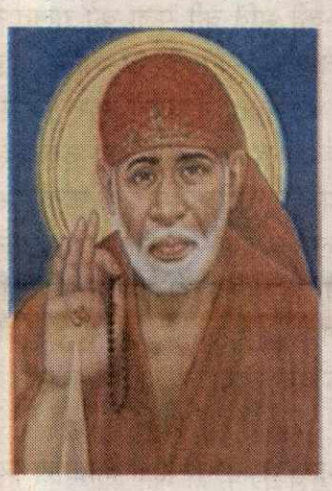

मंदिर मस्ज़िद गिरजाघर ने बांट दिया
भगवान को
धरती बांटी, सागर बांटा,
मत बांटो इन्सान को.....।

E-mail:- agnivesh70@gmail.com

अंधश्रद्धा और ठगी की उपज हैं अमरनाथ के बर्फ़ानी बाबा

–स्वामी अग्निवेश

जम्मू–कश्मीर की पहाड़ियों में अमरनाथ जी के तीर्थयात्रियों को साढ़े तेरह हज़ार फुट की ऊँचाई पर जाकर जिस बर्फ़ानी बाबा के दर्शन करने का अवसर मिल रहा है उसे भूगोल के विद्यार्थी स्टैलेक्टाइट नामक बर्फ़ का पुतला जानते हैं। लगभग महीने भर में ही पिघल जाने वाले बर्फ़ के इस स्टैलेक्टाइट पुतले को मुरादें पूरी करने वाले भगवान शिव का प्रकट होना मानकर जोखिम भरे रास्तों से वहां जाना एक बहुप्रचारित अंधश्रद्धा की उपज है। 150 वर्ष पहले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद और उनके बाद उन्हीं की परपंरा में विख्यात योगी योगेश्वरानंद जी ने इस कथित शिवलिंग की पूजा को अंधविश्वासपूर्ण बताया था। कई बार यह बर्फ़ानी बाबा यात्रा शुरू होने से पहले ही ग्लोबल वार्मिंग की वजह से पूरी तरह पिघल जाते हैं जैसा कि आज से 5 वर्ष पहले हुआ था और तब जम्मू–कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल जनरल सिन्हा ने अपने हेलीकाप्टर मे कृत्रिम बर्फ़ ले जाकर पुतला फिर से खड़ा किया ताकि लाखों श्रद्धालुओं की अंधश्रद्धा का पूरा दोहन किया जा सके। इस बार भी मीडिया रिपोर्टों के अनुसार अमरनाथ यात्रा शुरू होने के कुछ दिन बाद ही संभवतः तीर्थयात्रियों की अधिकता से बर्फानी बाबा पिघलना शुरू कर चुके हैं और तीर्थ यात्रा आयोजकों के लिए धर्मसंकट भी पैदा हो रहा है।

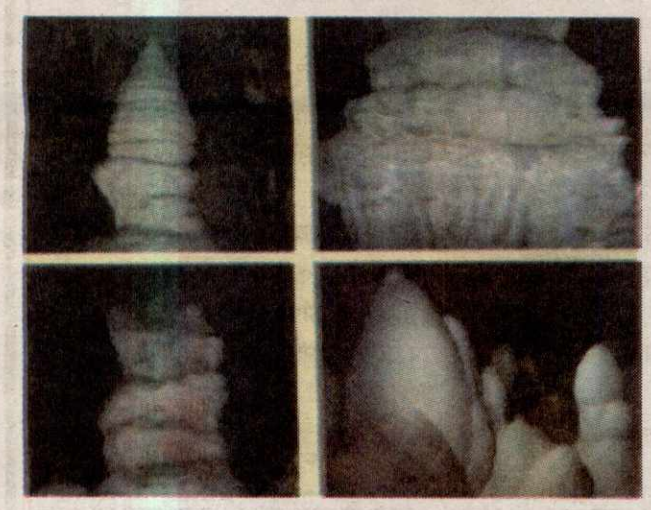

वेदो के अप्रतिम विद्वान महर्षि दयानंद ने माता–पिता और गरु जनो की सेवा को ही तीर्थ बताया और शिव का अर्थ सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता एवं सृष्टि के कण–कण में विद्यमान परमात्मा की कल्याण भावना बताया। जहां तक अमरनाथ गुफा में प्रकट होने वाले बर्फ़ के पुतले का सवाल है, यह प्राकृतिक सौंदर्य का विषय हो सकता है और इसी तरह के प्राकृतिक बर्फ़ के पुतले स्विटज़रलैंड, ऑस्ट्रिया तथा अन्य देशों के बर्फ़ानी पहाड़ों पर भी देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए प्रस्तुत चित्र देखें– मेरा उद्देश्य किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाने का नहीं है। मैं हिन्दू और मुस्लिम और ईसाई सभी समाज के लागों को अपने–अपने धर्मगुरुओं के धार्मिक अंधविश्वास के जाल में फंसने से बचाना चाहता हूँ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लोकसभा में दिए अपने पहले भाषण में ग़रीबी मिटाने के रास्ते में अंधश्रद्धा से मुक्ति दिलाना अपनी सरकार का कार्यक्रम बताया। हमे उनके इन उद्गारो का स्वागत करते हुए और संविधान की धारा 51A में प्रत्येक नागरिक के लिए दिए गए मौलिक कर्तव्यों का पालन करते हुए अंधविश्वास और अंधश्रद्धा फैलाने वाले पोंगापंथियों से सावधान रहना पड़ेगा जो लागों को चमत्कारवाद की चपेट में लेकर, मुरादें पूरी करने का भ्रम फैलाकर भोलेभाले लोगों की धार्मिक भावना का शोषण करते हैं और हर संभव तरीके से चढ़ावे पर चढ़ावा बटोरकर धर्म को ठगी का व्यापार बना देते हैं।

E-mail : agnivesh70@gmail.com

प्रेस विज्ञप्ति

हम सब सर्व धर्म संसद के धर्म गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा आध्यात्मिक समाज सेवी स्वामी अग्निवेश जी को आतंकवादी कहे जाने की कड़े शब्दों में भर्त्सना एवं निन्दा करते हैं। शंकराचार्य का यह व्यवहार निन्दनीय है। अगर जगत गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी के पास इस विषय में कोई भी सबूत हैं तो उन्हें स्वामी अग्निवेश के खिलाफ तुरन्त ही किसी भी पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करानी चाहिए। अन्यथा उन्हें शीघ्रातिशीघ्र मीडिया के माध्यम से सार्वजनिक तौर पर स्वामी अग्निवेश जी से माफी मांगनी चाहिए। अगर शंकराचार्य ऐसा नहीं करते तो इस पूरी घटना को ब्लैकमेलिंग के संदर्भ में देखा जायेगा, खासकर तब जब वह अंधविश्वास को लेकर स्वामी अग्निवेश जी द्वारा उठाये गये प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ रहे थे।

सभी धर्म गुरुओं से आग्रह करते हैं कि वे सदियों से चली आ रही विचार मंथन की अमृतधारा का सम्मान करें एवं किसी भी वाद–विवाद में शालीनता का परिचय दें एवं किसी भी प्रकार की असभ्यता, कटुता एवं अश्लीलता को न आने दे। आस्था की आड़ में वैज्ञानिक चिन्तन एवं तर्क संगत बहस का गला न घोटा जाये।

गोस्वामी सुशील महाराज, अध्यक्ष भृगु फाऊंडेशन
युवाचार्य लोकेश मुनि, अध्यक्ष अहिंसा विश्व भारती
परमजीत सिंह चंढोक, अध्यक्ष गुरुद्वारा बंगला साहिब
स्वामी आर्यवेश प्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2
डॉ. अली मर्चेंट, बहाई धर्म।

– मनु सिंह, संयोजक सर्वधर्म संसद, 7 जन्तर–मन्तर रोड, नई दिल्ली–1

thearyasamaj.org

साईं शंकराचार्य विवाद में स्वामी अग्निवेश के मूर्ति पूजा सम्बन्धी बयान पर स्वामी स्वरूपानन्द के बयान से आर्य जगत में भारी आक्रोश

शंकराचार्य या तो शब्द वापस लें या क्षमा याचना करें

साईं शंकराचार्य विवाद में उस समय एक नया मोड़ आया जब आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने शंकराचार्य स्वरूपानन्द पर सीधा निशाना साधा। स्वामी अग्निवेश जी ने अपने वक्तव्य में स्वरूपानन्द के साईं मामले में विवादित बयान की निन्दा करते हुए कहा कि स्वामी स्वरूपानन्द पाखण्ड को बढ़ावा दे रहे हैं, उन्होंने कहा कि परमात्मा निराकार है और उसी की उपासना करनी चाहिए। मूर्ति पूजा का पाखण्ड देश को कमजोर कर रहा है। उन्होंने कहा कि जब मंदिरों में अन्य मूर्तियों की पूजा का पाखण्ड चल रहा है तो स्वरूपानन्द जी साईं की मूर्ति की पूजा को गलत कैसे ठहरा सकते है। स्वामी जी ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा का ढोंग रचकर यह लोग भोली-भाली श्रद्धालु जनता को सुनियोजित ढंग से ठग रहे हैं और जब यही कार्य साईं के भक्तों ने करना शुरू किया तो इनकी परेशानी शुरू हो गई। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी स्वरूपानन्द मेरे प्रश्नों का उत्तर दें। वे बतायें कि किसी पत्थर की मूर्ति में प्राण कैसे डाले जा सकते हैं। यदि पत्थर की मूर्ति में कहीं पर भी प्राण प्रतिष्ठा के द्वारा प्राण डाले गये हों तो वे उस मूर्ति को सामने लायें। प्राण-प्रतिष्ठा से उस मूर्ति में चलने-फिरने, खाने-पीने व बोलने की शक्ति आ जानी चाहिए जो कि असम्भव है तथा अवैज्ञानिक है। स्वामी जी के वक्तव्य से पौराणिक जगत में तहलका मच गया और प्रश्नों का उत्तर न देकर स्वामी स्वरूपानन्द जी ने स्वामी अग्निवेश जी को आतंकवादी तक कह दिया और उनके विरुद्ध कई अपमान जनक शब्दों का प्रयोग किया।

स्वामी स्वरूपानन्द जी के इस धृष्टतापूर्ण व्यवहार से समूचे आर्य जगत में गहरा आक्रोश व्याप्त हो गया है। आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मांग की है कि स्वामी स्वरूपानन्द अपने शब्द वापस लें या सार्वजनिक रूप से क्षमा याचना करें। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों से अपील की है कि पत्र पत्रिकाओं में विरोध पत्र भेजें तथा गोष्ठियां एवं पत्रकार सम्मेलन आहूत करके स्वामी स्वरूपानन्द जी के विरुद्ध विरोध दर्ज करायें।

स्वामी अग्निवेश जी के साथ ऐसा कई बार हो चुका है। लेकिन इस बार स्वामी स्वरूपानन्द जी ने नैतिकता को ताक पर रखकर घोर आपत्तिजनक बयान दिया है। जिसकी घोर निन्दा की जाती है।

प्रेस विज्ञप्ति

श्री शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानंद सरस्वती जी महाराज द्वारा आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासी एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मानवाधिकार रक्षक स्वामी अग्निवेश को "आतंकी" कहना एक अनर्गल और बेबुनियाद आधारहीन आरोप है। मैं श्री शंकराचार्य जी के इस आरोप की कड़े शब्दों में भर्त्सना करता हूँ और श्री स्वामी स्वरुपानंद जी सरस्वती से विनम्र आग्रह करता हूँ कि वे अपने इस बयान को सार्वजनिक रूप से वापिस लें और "शंकराचार्य" जैसे गौरवशाली पद की गरिमा को कलंकित करने का प्रयास न करें।

दूसरे, हां यदि स्वामी स्वरुपानंद जी के पास स्वामी अग्निवेश जी के "आतंकी" होने का कोई ठोस प्रमाण है तो उन्हें उनके खिलाफ शीघ्र ही किसी पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज करानी चाहिये। यदि आदरणीय शंकराचार्य जी ऐसा नहीं करते हैं तो सत्य सनातन वैदिक धर्मानुयायियों को देखना चाहिये कि वे किस की वकालत कर रहे हैं?

धार्मिक पाखण्ड और अंधविश्वास के विरूद्ध स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज ने देश में अलख जगाई थी और भारतीय समाज में नवजागरण की लहर पैदा की थी। आज उसी परम्परा को निभाते हुए आर्य समाज के कर्मठ एवं जुझारू नेता-संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने मन्दिरों में "साईं पूजा" को लेकर सवाल उठाये तो श्री शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानंद जी महाराज ने बौखलाहट में आकर स्वामी अग्निवेश जी को आतंकी कह दिया। यह स्वामी स्वरुपानंद सरस्वती जी की वृद्धावस्था की कुंठा का भी प्रमाण हो सकता है, वरन् श्री शंकराचार्य जी तो वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् एवं मर्मज्ञ हैं। मैं आशा करता हूँ स्वामी स्वरुपानंद जी महाराज स्वामी अग्निवेश जी महाराज के खिलाफ बोले गये अपने शब्दों को सार्वजनिक तौर पर वापिस लेकर विचार मंथन की स्वस्थ परम्परा को बनाये रखेंगे और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देंगे।

–प्रो० श्योताज सिंह, महामंत्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा,
मो. 09416426961

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

दिन तो सभी परमात्मा ने काल गणना हेतु निर्धारित किये हैं। परन्तु किसी व्यक्ति विशेष या संस्था विशेष के अच्छे दिन तभी आते हैं जब व्यक्ति विशेष के गुण, कर्म व स्वभाव धर्मानुकूल हों तब उसका भविष्य आनन्दमय होता है और यदि ऐसा व्यक्ति किसी संस्था विशेष का संचालक हो तो उस संस्था का भविष्य भी उज्ज्वल होता है अर्थात् भविष्य में आने वाले दिन अच्छे होते हैं।

वर्तमान में ऐसी ही घटना ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2'' में घटित होती दिख रही है।

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य नेता, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, हजारों बंधुआ मजदूरों के उद्धारक, मानव समाज एकता के पक्षधर, सामाजिक बुराईयों जैसे – सती प्रथा, बाल विवाह, नारी उत्पीड़न, जातिवाद, मादक पदार्थ सेवन, आचारहीन शिक्षा आदि के उन्मूलन हेतु प्राण-प्रण से संघर्षशील रहते हैं, उन्होंने अपनी अत्यधिक व्यस्तता के कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद का कार्यभार 2 जुलाई, 2014 को सैकड़ों आर्य प्रतिनिधियों के समक्ष आर्य युवा नेता स्वामी आर्यवेश जी को सहर्ष सौंप दिया। इस महान त्याग के लिए उपस्थित आर्यजनों ने स्वामी अग्निवेश जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की और स्वामी जी का आभार व्यक्त किया।

सभा के नव नियुक्त प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भारतवर्ष में ही नहीं विदेशों में भी युवा आर्य संन्यासी नेता के रूप में प्रसिद्ध हैं। स्वामी जी मृदुभाषी, सत्संगी, और निराभिमानी व्यक्तित्व के धनी हैं। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के अन्तर्गत लाखों युवक-युवतियों के प्रेरणा स्रोत हैं और परिषद् का सफलतापूर्वक संचालन गत कई वर्षों से कर रहे हैं। अत: स्वामी आर्यवेश जी में अद्भुत संगठन क्षमता है जिसके आधार पर आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ता प्रदान करने में अवश्य सफल होते जान पड़ते हैं।

मुझे भी गत चार वर्षों से स्वामी आर्यवेश जी के साथ कार्य करने का अवसर मिला है इस अवधि में स्वामी जी के नेतृत्व में कुम्भ मेले में पाखण्ड खण्डन कैम्प का सफल संचालन, वैदिक विरक्त मण्डल का गठन, वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार यात्रा (उत्तराखण्ड) और विशाल आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

जहाँ तक मैं जानता हूँ आर्य जगत में स्वामी आर्यवेश जी का कोई आलोचक वा विरोधी नहीं है भले ही कुछ वैचारिक भिन्नता हो। स्वामी आर्यवेश जी उच्चकोटि के आर्य विद्वान, प्रखर वक्ता, प्रभावशाली सुदृढ़ शरीर, आकर्षक छवि और स्नेहशील हैं।

आर्य जगत के बाहर भी स्वामी जी के अनेक धनवान, प्रतिष्ठित व्यक्ति प्रशंसक हैं। उक्त गुणों के आधार पर मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य जगत में नई ऊर्जा का संचार होगा। आपसी झगड़े, मन-मुटाव समाप्त होकर आर्य समाज के संगठन में पुन: एकता स्थापित होकर आर्य समाज एक शक्तिशाली, प्रभावकारी संगठन के रूप में देश में ही नहीं विदेशों में भी अपना विशिष्ट स्थान बनायेगा।

अत: कहा जा सकता है कि आर्य समाज के अच्छे दिन आने वाले हैं। ऋग्वेद का संगठन मन्त्र
संगच्छध्वं संवद्ध्वं संवो मनांसि जानताम्।
देवा भागे यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।। ऋ. 10-191-211
साक्षात् होता जान पड़ रहा है।

– आश्रम, 116 गांधीनगर, मथुरा-281004, मो.:-9897180196

वधु चाहिए

हैदराबाद के हैटेकसिटी में कार्यरत 33 वर्षीय अपंग साफ्टवेयर इंजीनियर को 22 से 25 वर्षीय 12वीं या स्नातक तक शिक्षित, वैदिक संस्कृति संस्कार युक्त एवं शुद्ध शाकाहारी वधु चाहिए।

जात-पात का कोई बन्धन नहीं।

संपर्क :- 0-8142772392, 9885667682

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में उपनिषद् तथा वेदान्त दर्शन अध्ययन का स्वर्णिम अवसर

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में पिछले एक वर्ष से शिक्षा अष्टाध्यायी, व्याकरण आदि वेदाङ्ग एवं योगदर्शन, न्यायदर्शन आदि उपाङ्गों का अध्ययन-अध्यापन ऋषि प्रणाली से चल रहे हैं। इसी शृंखला में आध्यात्मिक उन्नति का अनुपम तथा साधना के रहस्यमय ग्रन्थ ग्यारह उपनिषद् एवं तत्पश्चात् सम्पूर्ण वेदान्तदर्शन (ब्रह्मसूत्र) का अध्यापन ऋषि पद्धति से वेदानुकूल व्याख्या सहित नियमित रूप से स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य) द्वारा वानप्रस्थ साधक आश्रम में अतिशीघ्र प्रारम्भ होने जा रहा है। अध्यात्म प्रेमी महानुभाव इस अवसर का लाभ उठावें तथा अन्य परिचितों को भी सूचना देवें।

इन 11 उपनिषदों व वदान्तदर्शन अध्ययन में लगभग 8-9 मास लगेंगे। इसके साथ-साथ प्रतिदिन संध्या, हवन, आत्मनिरीक्षण, समय-समय पर अनेक मूर्द्धन्य विद्वानों के दार्शनिक प्रवचन एवं योगनिष्ठ गुरुवर्य पूज्य स्वामी सत्यपति जी का सानिध्य, प्रेरणा व उपदेश भी प्राप्त होगा। संस्कृत से अनभिज्ञ विद्यार्थियों को साथ-साथ संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था भी रहेगी। गुरुकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व आध्यात्मिक ग्रन्थ अध्ययन में रुचि रखने वाले विद्यार्थी अपना पूर्ण परिचय, नाम, आयु, पता, दूरभाष संख्या, शैक्षणिक योग्यता आदि vaanaprastharojad@gmail.com पर भेजें अथवा व्यवस्थापक, वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पो.-सागपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात-383307 पर पत्रव्यवहार करें। सायं 7.30 से 8.00 बजे मो.:-09426408026 में सम्पर्क करें तथा सुबह 9.00 से सायं 6.00 बजे कार्यालय में सम्पर्क हेतु 02770-287417, 9427059550

निवेदक - स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक

शंकराचार्य को लगा कि दुकान फीकी पड़ रही तो साईं पर बोल दिया हमला: अग्निवेश

भास्कर न्यूज़ | रायपुर

साईं बाबा और शंकराचार्य स्वरूपानंद विवाद पर सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश ने कहा कि भक्त और भगवान के बीच बिचौलियों की कोई जरूरत नहीं है। दोनों के बीच यह विवाद सिर्फ व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के चलते पैदा हुआ है।

दोनों ही अपनी दुकान चमकाने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि इस विवाद की शुरुआत उस समय हुई जब साईं के भक्तों ने साईं की मार्केटिंग शुरू कर दी। इससे शंकराचार्य की दुकान फीकी पड़ने लगी थी। स्वामी अग्निवेश रविवार को दिल्ली से नियमित उड़ान से रायपुर पहुंचे थे। कुछ समय वहां रुकने के बाद बस्तर के लिए रवाना हो गए। स्वामी अग्निवेश ने इस दौरान शंकराचार्य द्वारा साईं बाबा की पूजा का विरोध किए जाने से जुड़े सवाल पर कहा कि पूजा में अंधविश्वास की कोई जगह नहीं है। लेकिन भोली-भाली जनता दोनों के बीच ठगी जा रही है।

बस्तर में कल्लूरी का विरोध

स्वामी अग्निवेश ने इस दौरान बस्तर में आईजी केएसआरपी कल्लूरी की तैनाती का विरोध किया। उन्होंने कहा कि बस्तर की जनता के बीच उनकी छवि अच्छी नहीं है। ऐसे में सरकार को वहां उनकी तैनाती नहीं करनी चाहिए। राज्य सरकार ने हाल ही में बस्तर में आईजी कल्लूरी की तैनाती की।

सीएम नहीं दे रहे मिलने का समय

अग्निवेश ने पत्रकारों से चर्चा में बताया कि उन्होंने छग के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह से मुलाकात का समय मांगा है जो अब तक उन्हें नहीं मिला है। वे उनसे बस्तर में आईजी कल्लूरी सहित आदिवासियों से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा करना चाह रहे हैं।

मिलने के लिए कभी भी आ सकते हैं: डॉ. रमन

सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश द्वारा आईजी कल्लूरी के प्रमोशन और बस्तर में तैनाती देने पर आपत्ति के सवाल पर मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा कि प्रमोशन नियमों के तहत ही दिया जाता है। जांच चलती रहती है। किसी को तैनाती उनके काम और क्षमता को देखते हुए दी जाती है। उन्होंने अग्निवेश के उस सवाल को भी खारिज किया, जिसमें अग्निवेश ने सीएम पर मिलने के लिए समय न देने का आरोप लगाया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई रोक नहीं है। कभी भी आ सकते हैं। इसमें वक्त न देने की क्या बात है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में
प्रान्तीय आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन व
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नव-निर्वाचित अध्यक्ष

स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन समारोह

रविवार 3 अगस्त, 2014, प्रात: 10 से 2 बजे तक

स्थान : आर्य समाज मंदिर, धीमानपुरा, शामली, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

कार्यक्रम

ध्वजारोहण : श्री रघुवीर सिंह आर्य, प्रधान जिला सभा शामली
अध्यक्षता : श्री आनन्द प्रकाश आर्य, प्रान्तीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
मुख्य अतिथि : डॉ. संजीव बालियान, केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार
मुख्य वक्ता : डॉ. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
विशिष्ट अतिथि : श्री अरविन्द संगल, चेयरमैन, नगर पालिका शामली, पं. माया प्रकाश त्यागी, वी. वी. आई. पी. रेजीडेन्सी, राजनगर, श्री पूरणचन्द्र आर्य, मंत्री जिला सभा, शामली

निवेदक –प्रवीन आर्य, महामन्त्री

वीर योगाश्रम खेड़ला में दो शिविरों का आयोजन

गुड़गांव जिले के खेड़ला ग्राम स्थित वीर योगाश्रम में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में दो शिविरों का आयोजन किया गया। जिनका सम्पूर्ण संचालन परिषद् के राष्ट्रीय व्यायामाचार्य स्वामी विजयवेश जी के सान्निध्य में शिविरों का आयोजन किया गया। युवा चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 8 जून से 15 जून तक किया गया। जिसमें प्रशिक्षण डॉ. नानक चन्द व रामेन्द्र आर्य ने दिया। कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 16 से 22 जून तक किया गया जिसमें बौद्धिक प्रशिक्षण परिषद् की कार्यकारी प्रधान बहन पूनम आर्या, प्रान्तीय मन्त्री बहन प्रवेश आर्या ने दिया।

बड़ौत में प्रान्तीय शिविर का आयोजन

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में प्रान्तीय शिविर का आयोजन जनता वैदिक इण्टर कॉलेज बड़ौत में किया गया। इस शिविर का संचालन ब्र. रामफल आर्य-प्रदेशाध्यक्ष ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी, महामन्त्री बिरजानन्द एडवोकेट जी, उपाध्यक्ष आचार्य सन्तराम जी के अतिरिक्त विभिन्न वैदिक विद्वानों ने आध्यात्मिक शिक्षा दी। शारीरिक प्रशिक्षण मा. शिव कुमार आर्य के नेतृत्व में ब्र. सहसरपाल, श्री पाल, सुधीर, गंगाशरण, अमरजीत आदि ने किया। कार्यक्रम बेहद सफल रहा।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

NDPSo on 25/26 जुलाई, 2014
प्रकाशन की तिथि : 24 जुलाई, 2014

वैदिक सार्वदेशिक 24 से 30 जुलाई 2014

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्रभु की शरण में यश और सुख

पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन् अमृक्तम्।
नामानि चित् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त सन्दृष्टौ।।

— ऋ. ६/१/४

ऋषिः– भारद्वाजो बार्हस्पत्यः।। देवता–अग्निः।। छन्दः–निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनयः- हे देव! हमने तुम्हारे पद के, तुम्हारे प्राप्तव्य-स्वरूप के, तुम्हारे चरणों के दर्शन पाये हैं, तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हुए, तुम्हारी स्तुति करते हुए, तुम्हारे आगे झुकते हुए, भक्तिभाव से आत्म-समर्पण करते हुए ही हमें तुम्हारे दुर्लभ पद के दर्शन मिले हैं। यह सब तुम्हारी भक्ति की महिमा है। इसके साथ ही मेरी पुरानी यश पाने की इच्छा भी तृप्त हो गई है। तुम्हारी कृपा से ऐसा यश मिला है कि जो कि मृदित नहीं हो सकता। बाहर के मनुष्यों से मिलने वाला यश तो उनके अधीन होता है, वह मृदित होता रहता है, परन्तु तुम्हारे पद-दर्शन से जो अन्दर का यश मिला है वह अक्षय है, उसे पाकर अब मुझे किसी वाह्य यश की आकांक्षा नहीं रही है। तेरे सेवकों को संसार में सज्जन पुरुषों द्वारा भी बहुत सा यश मिला करता है, पर वह भी तुझ द्वारा मिले इस आन्तर यश की ही छाया होती है। हे अग्निदेव! तेरी भक्ति ने मुझे उबार दिया हैं तेरी भक्ति का तो इतना प्रताप है कि यदि कोई तेरे यज्ञार्ह (यज्ञ में उच्चारणीय) पवित्र पुण्य नामों को ही केवल धारण करे, उन्हें वाणी से बोलता हुआ भक्ति से हृदय में गुँजाता रहे, तो इस नाम-जपन, नाम-धारण से ही उसका अन्तःकरण इतना शुद्ध हो जाएगा कि उस पर तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि हो जाएगी। तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि में रहता हुआ वह सुख से आगे बढ़ता जाएगा, उसके व्याधि, स्त्यान आदि विघ्न हरण होते जाएंगे, वह निर्विघ्न सुख से उन्नत होता जाएगा।

तो क्या, हे अग्ने। हम तेरे पवित्र नामों को भी धारण न कर सकेंगे? यह तो कम से कम है जो हमें तुम्हारी ओर पहुँचने के लिए करना चाहिए। हमें तो तुम्हारे प्रेम के मार्ग में अन्त तक जाना है और एक दिन यह कह सकने का योग्य होना है "हमने तेरे पद के दर्शन पा लिए हैं और अनश्वर यश के भागी हो गये हैं।"

शब्दार्थः- श्रवस्यवः= यश की इच्छावाले हमने देवस्य=तुझदेव के पदम्=प्राप्तव्य स्वरूप को नमसा व्यन्तः=नमस्कार द्वारा देखते हुए अमृक्तम्=नृदित होने वाले श्रवः=यश को आपन्=प्राप्त किया है। जो लोग यज्ञियानि=यज्ञार्ह नामानि चित्=नामों को ही दधिरे=धारण करते हैं वे भी ते भद्रायां सन्दृष्टौ=तेरी कल्याणमयी दृष्टि में रणयन्त=रहते हुए सुख पाते है।।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्रावणी महापर्व पर प्रकाशित प्रमाणित जीवन चरित्र

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- स्व. पं. चमूपति एम. ए.

पृष्ठ संख्या-256, मूल्य - 100/- रुपये

पं. चमूपति द्वारा लिखित "योगेश्वर कृष्ण" अनोखा प्रसाद जन साधारण के लिए उपलब्ध है। अप्रतिम विद्वान पं. चमूपति जी ने योगेश्वर कृष्ण का जीवन चरित्र निष्पक्ष एवं प्रमाण सहित लिखा है। यह जीवन चरित्र ज्ञान पिपासु व्यक्तियों के लिए हर प्रकार से पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पुस्तक 23X36 के बड़े साईज पर बिलासपुर टी. ए. कागज पर मुद्रित है तथा कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गई है। लैमिनेशन कर टाइटल को अत्यन्त आकर्षक बनाया गया है।

जन्माष्टमी से पूर्व अग्रिम आदेश करने पर यह पुस्तक मात्र 50 रुपये में दी जायेगी। अपनी धनराशि "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर शीघ्र भेजें। दूरभाष संख्या-011-23274771, 23260985 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

(डाक व्यय तथा पैकिंग खर्च अतिरिक्त देना

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेदों के पुनः प्रकाशन की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।